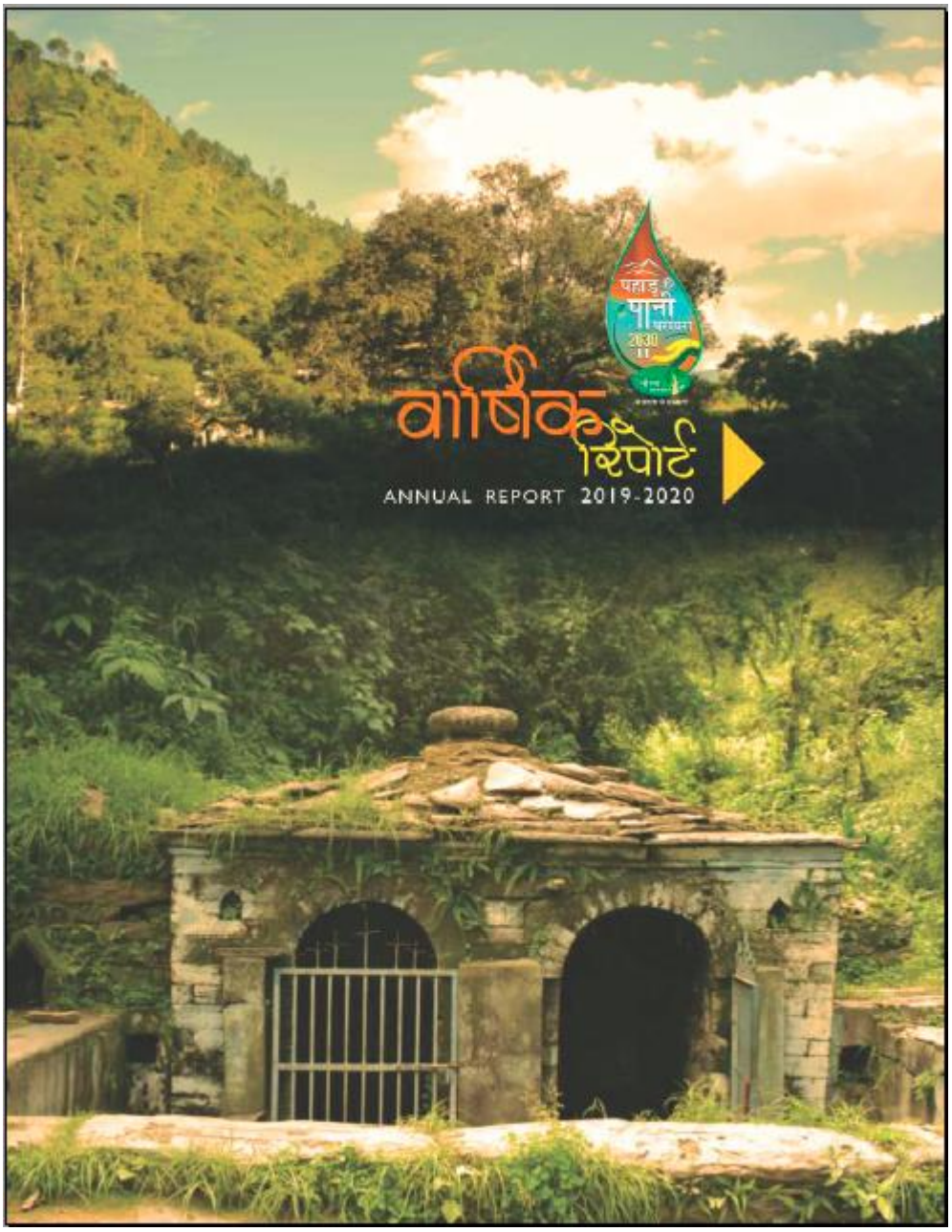

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT 2019-2020

When there is teamwork and collaboration, wonderful things can be achieved

NAMAMI GANGE

National Mission for Clean Ganga
Ministry of Jal Shakti
Department of Water Resources,
River Development and
Ganga Rejuvenation, Govt. of India

Empowering

Operation Blue Himalaya

NAULA®
Himalayan Wetlands & Spring Biodiversity
NETWORK

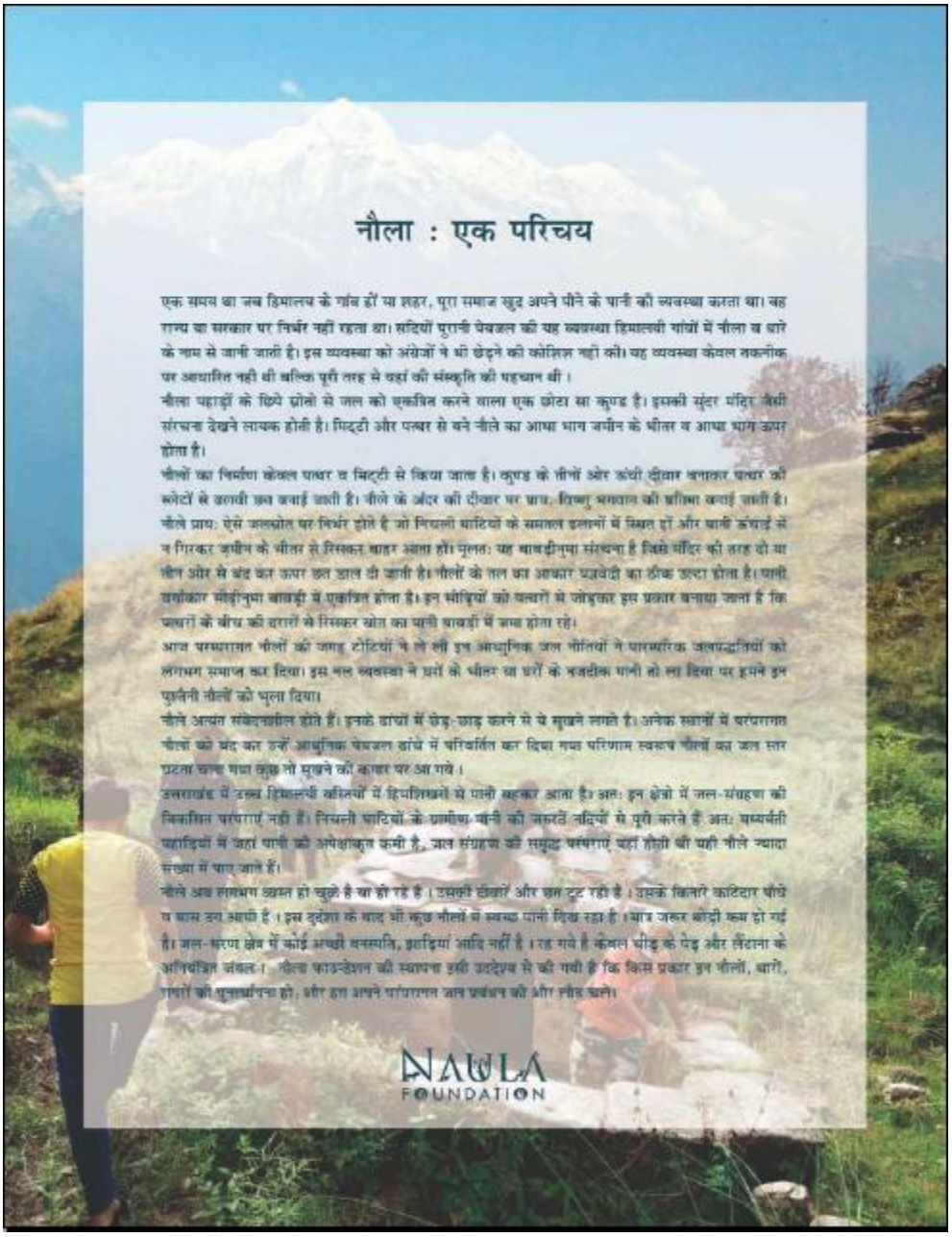

नौला : एक परिचय

एक समय था जब हिमालय के गांव हों या शहर, पूरा समाज खुद अपने पीने के पानी की व्यवस्था करता था। वह राज्य या सरकार पर निर्भर नहीं रहता था। सदियों पुरानी पेयजल की यह व्यवस्था हिमालयी गांवों में नौला व धारे के नाम से जानी जाती है। इस व्यवस्था को अंग्रेजों ने भी छेड़ने की कोशिश नहीं की। यह व्यवस्था केवल तकनीक पर आधारित नहीं थी बल्कि पूरी तरह से यहां की संस्कृति की पहचान थी ।

नौला पहाड़ों के छिपे स्रोतों से जल को एकत्रित करने वाला एक छोटा सा कुण्ड है। इसकी सुंदर मंदिर जैसी संरचना देखने लायक होती है। मिट्टी और पत्थर से बने नौले का आधा भाग जमीन के भीतर व आधा भाग ऊपर होता है।

नौलों का निर्माण केवल पत्थर व मिट्टी से किया जाता है। कुण्ड के तीनों ओर ऊंची दीवार बनाकर पत्थर की स्लेटों से ढलवी छत बनाई जाती है। नौले के अंदर की दीवार पर प्रायः विष्णु भगवान की प्रतिमा बनाई जाती है। नौले प्रायः ऐसे जलस्रोत पर निर्भर होते है जो निचली घाटियों के समतल इलाकों में स्थित हों और पानी ऊंचाई से न गिरकर जमीन के भीतर से रिसकर बाहर आता हो। मूलतः यह बावड़ीनुमा संरचना है जिसे मंदिर की तरह दो या तीन ओर से बंद कर ऊपर छत डाल दी जाती है। नौलों के तल का आकार यज्ञवेदी का ठीक उल्टा होता है। पानी वर्गाकार सीढ़ीनुमा बावड़ी में एकत्रित होता है। इन सीढ़ियों को पत्थरों से जोड़कर इस प्रकार बनाया जाता है कि पत्थरों के बीच की दरारों से रिसकर स्रोत का पानी बावड़ी में जमा होता रहे।

आज परम्परागत नौलों की जगह टोटियों ने ले ली इन आधुनिक जल नीतियों ने पारम्परिक जलपद्धतियों को लगभग समाप्त कर दिया। इस नल व्यवस्था ने घरों के भीतर या घरों के नजदीक पानी तो ला दिया पर हमने इन पुश्तैनी नौलों को भुला दिया।

नौले अत्यंत संवेदनशील होते हैं। इनके ढांचों में छेड़-छाड़ करने से ये सूखने लगते है। अनेक स्थानों में परंपरागत नौलों को बंद कर उन्हें आधुनिक पेयजल ढांचे में परिवर्तित कर दिया गया परिणाम स्वरूप नौलों का जल स्तर घटता चला गया कुछ तो सूखने की कगार पर आ गये ।

उत्तराखंड में उच्च हिमालयी बस्तियों में हिमशिखरों से पानी बहकर आता है। अतः इन क्षेत्रों में जल-संग्रहण की विकसित परंपराएं नहीं हैं। निचली घाटियों के ग्रामीण पानी की जरूरतें नदियों से पूरी करते हैं अतः मध्यवर्ती पहाड़ियों में जहां पानी की अपेक्षाकृत कमी है, जल संग्रहण की समृद्ध परंपराएं यहां होती थी यहीं नौले ज्यादा संख्या में पाए जाते हैं।

नौले अब लगभग खत्म हो चुके है या हो रहे है । उसकी दीवारें और छत टूट रही है । उसके किनारे कांटेदार पौधे व घास उग आयी है । इस दुर्दशा के बाद भी कुछ नौलों में स्वच्छ पानी दिख रहा है । मात्र जरूर थोड़ी कम हो गई है। जल-भरण क्षेत्र में कोई अच्छी वनस्पति, झाड़ियां आदि नहीं है । रह गये है केवल चीड़ के पेड़ और लैंटाना के अनियंत्रित जंगल । नौला फाउन्डेशन की स्थापना इसी उद्देश्य से की गयी है कि किस प्रकार इन नौलों, धारों, गधेरों की पुनर्स्थापना हो, और हम अपने पारंपरागत जल प्रबंधन की ओर लौट चलें।

NAULA FOUNDATION

Protecting Traditional Environment

Operation Blue Himalaya

NAULA®
Structural Design.

Ensuring both architectural quality and preservation of Traditional characteristics must be a goal of building design for sustainable environments.
Imitation of traditional building techniques and use of natural materials are applying again in Naula Structural Design.

नौला फाउन्डेशन

नमामि गंगे
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन

जीवन बहुत लोगों का एक सम्मिलित चित्र है। कोई माली गुलाब के फूल बनाता नहीं है, सिर्फ जमीन तैयार करता है, परम्परा के बीज बोता है, संस्कार की खाद देता है, अनुभव के फूल तो अपने से आते हैं।

जिनके भीतर भी थोड़ी आत्मा है, उनके फूल खिलेंगे ही, बीज तो वही है, वृक्ष बना है, पत्तों से भरा है, फूल खिले हैं। हमारे संरक्षक आदरणीय यशोधर मठपाल जी, पर्यावरण संरक्षक मनोहर सिंह मनराल जी, किशन भट्ट जी, पान देव धुवाल जी, मोहन चंद्र धुवाल जी, नवीन जोशी जी, गजेन्द्र पाठक जी, कमला कैड़ा जी, डा. मोहन चंद्र तिवारी जी, प्रेम सिंह बनेशी जी, धीरेश जोशी जी, गोपाल दत्त पलड़िया जी, डा. विवेकानंद पाठक जी, युवा ग्राम प्रधान रेखा बिष्ट जी व कुमारी सुमन जी, खेम सिंह कठायत जी, कैलाश राघव जी, अनिल कुशवाहा जी, युवा ग्राम प्रधान ठाकुर देवेन्द्र सिंह जी जैसे अनगिनत प्रकृति प्रेमियों, वैज्ञानिकों, समाजसेवियों, बुद्धिजीवी वर्ग जिन्होंने समाज के लिए अपनी निःस्वार्थ सेवायें दी है, जो बिना किसी स्वार्थ के परमार्थ के लिए धरती पर माली का निरंतर कार्य कर रहे हैं उनके विगत 40 सालों के प्राकृतिक-सांस्कारिक अनुभवों का साझा परिणाम है नौला फाउन्डेशन।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून,
पानी गए न उबरे, मोती, मानुस, चून।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार द्वारा सहयोजित, पहाड़-पानी-परम्परा नौला फाउन्डेशन की नींव है, नौले धारे हमारी संस्कृति है, पहाड़ हमारा गौरवशाली इतिहास है, हमें एक ऐसी दुनिया बनानी है जहां पर जीवन मूल्यों में प्रकृति सबसे महत्वपूर्ण है, जैवविविधता गौरवान्वित है, पहाड़ हरे-भरे हैं, जहां हर मनुष्य प्रकृति प्रेम में है।